NAME- ANMOL BISHT ADMN NO- V-2019-30-011

PG STUDENT (Department of Veterinary Pathology)

इक रोज कयामत हुई धरा पर

रंग और उत्सव बंद हुए सब

काल चक्र की ये कैसी चाल

ढली जिंदगी न मिल रही ढाल।

मनुष्य था बडा गतिवान

कुछ अहंकार होने का शक्तिवान

लेकिन

रुक गए काम धंधे, थम गई हवाई रफ्तार

लॉक डाउन ने पटक दिए वृद्धि के सब अरमान

जीडीपी और इकॉनमी के गिरे सब सूचकांक

घर के आंगन में पड़े लैपटॉप में सिमटे सपने हुए तमाम।

कालभैरव खुद प्रकट भये,

क्रोधित हैं प्रलय का हैं जो नाम

बहुत शव बिछे , प्रभु त्राहीमाम ।

आज नभ में विचरते पंछी हैं

उन्मुक्त गगन , ऊंची उड़ान

वो सताए गएछीने गए घरोंदे ।

लेकिन उनकी आवाज में अब

भी मनुष्यों के लिए आश्वासन है

उलाहना नहीं।

गली में खड़े ये श्वान

मनुज को ही ढूंढ रहे

मोर भी स्वतंत्र हैं

किन्तु स्वतन्त्रा में स्वछंदता है

कोई प्रतिकार नहीं ।

और मां वसुंधरा का परिवेश

बहुत स्वछंद है, धारायें निर्मल हैं

भूमि सुगन्धित वृक्ष हरे

और वायु प्रदुषण मुक्त।

लेकिन वसुंधरा अब भी अभाव में है

वो माँ है , उसकी यही विडंबना है

उसकी संतति ने उसे बहुत सताया

किन्तु माँ फिर भी प्रतीक्षा में है

पुनः नन्हे कदमो की आहट उस पर भागे

आँचल से वो सहलाये उसकी थकान।

हे आशुतोष

क्यों नटराज से महाकाल बन हो विराजे,

धरा पर करुणा करो, शरण में लो हे सर्पराज

हे मुकुंद

हैं संतान हम तुम्हारी , आशीष का सिर पे हस्त धरो

फिर मां वसुंधरा की खुशियों की माँग भरो।